इकाई—17

संस्कृत व्याकरण णिजन्त एवं सनन्त प्रक्रिया

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य
17.1 प्रस्तावना
17.2 व्याकरण : एक परिचय
  17.2.1 लघुसिद्धांत कौमुदी : एक परिचय
  17.2.2 तिङन्त बोध
  17.2.3 परस्मैपदी प्रत्यय
  17.2.4 आत्मनेपदी प्रत्यय
17.3 धातु रूप विचार
  17.3.1 सामान्य धातु रूप विचार
  17.3.2 विशेष धातु रूप विचार
17.4 णिजन्त प्रक्रिया
  17.4.1 णिजन्त प्रक्रिया के प्रमुख सूत्र
  17.4.2 णिजन्त प्रक्रिया के उदाहरणों की रूपसिद्धि
17.5 सनन्त प्रक्रिया
  17.5.1 सनन्त प्रक्रिया के प्रमुख सूत्र
  17.5.2 सनन्त धातु रूप सिद्धि
17.6 पारिभाषिक शब्दावली
17.7 अभ्यासार्थ प्रश्न
17.8 सारांश
17.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

17.0 उद्देश्य

संस्कृत एम.ए. पूर्वार्द्ध के चतुर्थ प्रश्न पत्र की इकाई 17 में संस्कृत व्याकरण णिजन्त एवं सनन्त प्रक्रिया को निर्धारित किया गया है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप–

- तिङन्त बोध परस्मैपदी प्रत्यय आत्मनेपदी प्रत्यय,सामान्य धातु रूप विचारविशेष धातु रूप विचार का ज्ञान प्राप्त कर पायेंगें ।
- णिजन्त प्रक्रिया के अन्तर्गत णिजन्त प्रक्रिया के प्रमुख सूत्र एवं णिजन्त प्रक्रिया के उदाहरणों की रूपसिद्धि का अवबोध कर पायेंगें।
- सनन्त प्रक्रिया,सनन्त, प्रक्रिया के प्रमुख सूत्र,सनन्त धातु रूप सिद्धि के विषय में विस्तृत जानकारी ले पायेंगें ।

17.1 प्रस्तावना

''व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते शब्दाः अनेनेति व्याकरणम्, जिसके द्वारा प्रकृति–प्रत्यय का विवेचन किया जाता है। यजुर्वेद में व्याकरण का अर्थ है कि प्रजापति ने शब्दरूपों में सत्य और अनृत का व्याकरण (विश्लेषण) किया। इस आधार पर सत्य में श्रद्धा और असत्य में अश्रद्धा की प्रतिष्ठा की। महाभाष्यकार पतञ्जलि ने व्याकरण की अनेक परिभाषाएँ दी हैं।

व्याकरण की परिभाषाएँ– ''व्याक्रियन्ते शब्दा अनेनेति व्याकरणम्'' अर्थात् जिससे शब्दों का प्रकृति–प्रत्यय आदि रूप से विभाग किया जाता है, वह व्याकरण है।

इसी प्रकार ''लक्ष्यलक्षणे व्याकरणम्' अर्थात् लक्ष्य और लक्षण दोनों मिलकर व्याकरण होता है। शब्द लक्ष्य है और सूत्र लक्षण है। शब्द का प्रकृति–प्रत्यय विश्लेषण करने वाला शास्त्र व्याकरण शास्त्र है। अतः शब्द के निर्धारण में सूत्रों का निश्चित करना ही व्याकरण है।

17.2 व्याकरण : एक परिचय

संस्कृत व्याकरण सभो भाषाओं की अपेक्षा सर्वाधिक समृद्ध व्याकरण है, उसका कारण है कि इसमें प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति किसी न किसी धातु से हुई है और प्रत्येक धातु का अपना स्वतन्त्र अर्थ होता है। सामान्य व्याकरण की दृष्टि से 'धातु' शब्द का अर्थ है– जिससे शब्दों की व्युत्पत्ति हो, वह मूल आधार। संस्कृत धातु पाठ में पाणिनि ने 1880 धातुओं की गणना की है, जिनसे विभिन्न प्रत्यय जोड़कर असंख्य शब्दों का निर्माण किया जाता है।

संस्कृत भाषा के वाक्य में क्रिया पद ही प्रधान होता है। वाक्य के अन्य सारे पद क्रिया से सम्बन्ध होने के कारण ही कारक रूप ग्रहण करते हैं वाक्य में प्रयुक्त क्रिया के काल या वृत्ति को वैयाकरणों ने लकार नाम दिया है। इन्हें लकार इसलिए कहा जाता है कि इनके प्रत्येक के नाम 'ल' से शुरू होते हैं। यथा –

लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट् (केवल वेद में होता है), लोट्, लड्, लिङ्, लुङ् तथा लृङ्।

17.2.1 लघुसिद्धांत कौमुदी : एक परिचय –

पाणिनि मुनि व्याकरण शास्त्र के प्रवर्तक आचार्य हुए, जिन्होंने अष्टाध्यायी में व्याकरणात्मक ज्ञान के लिए अपना एक क्रम रखा, जो विद्वानों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं वैज्ञानिक क्रम था, परन्तु इस क्रम में सूत्रों का क्रम विषय–क्रम के अनुसार एक स्थान पर न होने के कारण व्याकरण ज्ञान के साधारण जिज्ञासु की कठिनाई को देखकर 'भट्टोजिदीक्षित' ने अष्टाध्यायी के सूत्रों को विषय क्रमानुसार व्यवस्थित करते हुए ''सिद्धांत कौमुदी'' की रचना की, जिसकी टीका (प्रौढ़मनोरमा) भी उन्होंने स्वयं लिखी।

'सिद्धांत कौमुदी' में अष्टाध्यायी के सभी सूत्रों का समावेश होने के कारण उसकी विशालता को देखते हुए भट्टोजिदीक्षित के शिष्य वरदराजाचार्य ने सरल रूप प्रस्तुत करने के लिए 'मध्यसिद्धान्तकौमुदी' रूप में संक्षेपण किया तथा बालकों को शीघ्र व्याकरण का बोध कराने के लिए बारह सौ अस्सी सूत्रों में ही सभी विषयों के मुख्य–मुख्य बिन्दु एकत्रित करके ''लघुसिद्धांत कौमुदी'' की रचना की। इस ग्रन्थ में विषय क्रम इस प्रकार है– संज्ञा प्रकरण– सन्धि प्रकरण' सुबन्त (अजन्त–हलन्त) प्रकरण– अव्यय प्रकरण– तिङन्त प्रकरण (दस लकारों में धातु रूप सिद्धि)– प्रक्रिया भाग– कृदन्त प्रकरण– कारक प्रकरण– समास प्रकरण– तद्धित प्रकरण– स्त्री प्रत्यय।

17.2.2 तिङन्त बोध

ये सभो लकार वर्तमान, भ्त, भविष्य आदि कालों के वाचक हैं अथवा विधेयादि के बोधक हैं।

प्रत्येक लकार में तीन पुरूष होते हैं, जिनके प्रत्येक के तीन–तीन वचन।

इस प्रकार प्रत्येक धातु के नौ रूप पाये जाते हैं। जिन धातुओं से ये विभक्तियाँ बनाई जाती हैं, वे भो दो प्रकार की होती हैं– परस्मैपद और आत्मनेपद।

सामान्यतः धातुओं से जिन प्रत्ययों को जोड़कर धातु रूप बनाये जाते हैं वे प्रत्यय 'तिङ्' प्रत्यय कहलाते हैं तथा उनसे युक्त धातु रूपों को 'तिड.न्त' कहा जाता है।

ये 'तिङ्' प्रत्यय परस्मैपद तथा आत्मेपद में मिलाकर 9+9 त्र 18 होते हैं, जिनका प्रारम्भ 'तिप्' के 'ति' से शुरू होकर समापन 'महिङ' के 'ङ्' पर होता है। इसीलिए इन्हें 'तिङ्' प्रत्यय (प्रत्याहार की परम्परा से) कहा जाता है

ये तिङ् प्रत्यय हैं –

17.2.3 परस्मैपदी प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिप्	तस्	झि
मध्यम पुरुष	सिप्	थस्	थ

उत्तम पुरुष	मिप्	वस्	मस्

17.2.4 आत्मनेपदी प्रत्यय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इड्	वहि	महिङ्

17.3 धातु रूप विचार

17.3.1 सामान्य धातु रूप विचार –

सामान्यतः धातु रूप बनाने में धातु से तिप् आदि प्रत्यय लगाकर सामान्य क्रिया रूप बनाये जाते हैं। यथा –

भ्+तिप् भवति पठ्+तिप् पठति इत्यादि।

17.3.2 विशेष धातु रूप विचार –

प्रत्येक धातु का अपना एक निश्चित अर्थ होता है, जिसके साथ तिङ् प्रत्यय जोड़कर धातु रूप बनाया जाता है, परन्तु धातुरूप से जब कोई विशेष अभिप्राय लिया जाता है, तो उसके लिए

धातु के आगे विशेष प्रत्यय जोड़कर एक विशेष धातुरूप बनाया जाता है, तत्पश्चात् उससे 'तिङ्' प्रत्यय जोड़ते हुए धातुरूप बनाया जाता है और इस विधि को 'प्रक्रिया' के नाम से अभिहित किया जाता है। ये प्रक्रियाएँ अथवा प्रत्ययान्त धातुएँ चार प्रकार की होती हैं– णिजन्त/ण्यन्त,सनन्त, यड.न्त और नामधातु।

17.4 णिजन्त प्रक्रिया

जब किसी धातु के अर्थ में प्रेरणा अर्थ भो जोड़ना हो तो धातु से णिच् प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा जाना से भिजवाना, बनाना से बनवाना, सुनना से सुनवाना आदि। सामान्यतः किसी धातु का जो कर्ता होता है, प्रेरणार्थक धातु बन जाने पर वह मूल कर्ता स्वयं काम न करके किसी दूसरे से काम करवाता है। यथा– रामः पाठं पठति– रामः अनुजेन पाठं पाठयति। अथवा यदि प्रेरणार्थक धातु में कर्ता वही रहता है तो प्रेरणा देने वाला एक अन्य कर्ता हो जाता है। यथा– भत्यः कटं करोति– रामः भत्येन कटं कारयति। णिच् प्रत्यय लगने पर कभो–कभो धातु का अर्थ परिवर्तित हो जाता है। णिच् प्रत्यय जुड़ने से धातु कदाचित् अकमक से सकमक भो हो जाती है। णिजन्त धातु के रूप चुरादिगणी धातुओं के समान चलते हैं। धातु और तिङ् प्रत्यय के बीच जुड़ने वाले णिच् प्रत्यय का केवल 'इ' शेष रहता है।

17.4.1 णिजन्त प्रक्रिया के प्रमुख सूत्र

1. **स्वतन्त्रः कर्ता** – क्रिया की उत्पत्ति में जो प्रधान रूप से विवक्षित हो, उसे कर्ता कहते हैं।
2. **तत्प्रयोजको हेतुश्च** – कर्ता के प्रयोजक को हेतु कहते हैं और उसकी हेतु तथा प्रेरक संज्ञा होती है।
3. **हेतुमति च** – प्रयोजक के कार्य में धातु से 'णिच्' प्रत्यय किया जाता है। अर्थात् जब कर्ता को अन्य व्यक्ति, जो उसमें कारण होता है अथवा प्रयोजक होता है अथवा कार्य करने की प्रेरणा देता है तो सामान्य धातु के साथ 'णिच्' प्रत्यय जोड़कर धातु

को प्रेरणार्थक बनाई जाती है, तत्पश्चात् उससे 'तिप्' आदि प्रत्यय लगाकर धातुरूप बनाया जाता है।

17.4.2 शब्दरूप सिद्धि

भावयति :– भवन्तं प्रेरयति –

'भ्' धातु से 'हेतुमति च' सूत्र से णिच् प्रत्यय	–	भ्+णिच्
''हलन्त्यम्'' से च् का लोप	–	भ्+णिच्
'चुटू' से ण् का लोप	–	भ्+इ
'अचोञ्णिति' से भ् के उ को वृद्धि आदेश	–	भो+इ
'एचोऽयवायावः' से औ को 'आव्' आदेश	–	भाव्+इ
'सनाद्यन्ताः धातवः' से भावि की धातु संज्ञा	–	भावि
'तिप् तस् झि...' सूत्र से तिप् प्रत्यय	–	भावि+तिप्
'हलन्त्यम्' से 'प्' का लोप	–	भावि+तिप्
'तिङ्शित् सार्वधातुकम्' से सार्वधातुक संज्ञा		
'कतरिशप्' से शप् प्रत्यय	–	भावि+शप्+ति
अनुबन्ध लोप	–	भावि+शप्+ति
		भावि+अ+ति
'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' से गुण	–	भावे+अ+ति
एचोऽयवायावः' से 'अय्' आदेश	–	भावय्+अ+ति
	=	भावयति

इति सिद्धम्

अबीभवत् –

'भ्' धातु से 'हेतुमतिच' से णिच्' प्रत्यय	–	भ्+णिच्
अनुबन्ध लोप होकर	–	भ्+इ
यहाँ 'णिच्यच...' से पहले वृद्धि नहीं होगी		
'सनाद्यन्ता.....' से धातु संज्ञा, तिप्	–	भ्+इ+तिप्
'लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः' से अट् का आगम	–	अट्+भ्+इ+ति
अनुबन्ध लोप – च्लि प्रत्यय	–	अ+भ्+इ+ति
च्लि लुङि	–	अ+भ्+इ+च्लि+ति
च्लि के स्थान पर 'णिश्रिद्रुस्रुभ्य.' से चङ् प्रत्यय	–	अ+भ्+इ+चङ्+ति
अनुबन्ध लोप	–	अ+भ्+इ+अ+ति
इतश्च से ति का इ लोप	–	अ+भ्+इ+अ+त्
'चडि.' से धातु को द्वित्व	–	अ+भ्+भ्+इ+अ+त्
अभ्यास कार्य होने पर	–	अ बु भ् इ अ त्
ह्रस्वः से भ को ह्रस्व	–	अ भ भ् इ अ त्
अभ्यासे चर्चः से भ को ब्	–	अ बु भ इ अ त्
'अचोञ्णिति' से आदिवृद्धि	–	अ बु भो इ अ त्
'एचोऽयवायावः' से आवादेश	–	अ बु भाव् इ अ त्
'णौ चङ्युपधायाः' ह्रस्वः' से उपधा ह्रस्व	–	अ बु भ व् इ अ त्

'णेरनिटि' से इ ;णिच्द्ध का लोप	–	अ बु भ व् अ त्
'सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे' से सन्वद्भाव	–	अ बु भ व् अ त्
सन्वद्भाव होकर	–	'ओःपुयण्ज्यपरे' से
अभ्यास के उ को इ आदेश	–	अ बि भ व् अ त्
'दीर्घो लघोः' से लघु को दीर्घ	–	अ बी भ व् अ त्
	=	अबीभवत्

इति सिद्धम

सूत्र की व्याख्या –

'अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुङ्णौ'

अर्ति, ह्री, व्ली, री, क्नूयी, क्ष्मायी, आकारान्त धातु को 'णिच्' परे रहते 'पुक्' का आगम होता है। 'पुक्' में से 'प्' शेष रहता है।

शब्द सिद्धि –

स्थापयति –

'स्था' धातु से 'हेतुमतिच' से णिच्	–	स्था+णिच्
अनुबन्ध लोप	–	स्था+इ
'अर्तिह्रीव्ली..' से 'पुक्' का आगम	–	स्था+पुक्+इ
पुक् का अनुबन्ध लोप – प् शेष	–	स्था+प्+इ
	–	स्थापि
'सनाद्यन्ता..' से स्थापि की धातुसंज्ञा	–	स्थापि+लट्
'तिप्तस्झि ...' से तिप् प्रत्यय	–	स्थापि+तिप्
सार्वधातुकसंज्ञा, शप् प्रत्यय	–	स्थापि+शप्+तिप्
अनुबन्ध लोप	–	स्थापि+अ+ति
'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' से गुण	–	स्थापे+अ+ति
'एचोऽयवायावः' से अयादेश	–	स्थापय्+अ+तित्रस्थापयति इति

इति सिद्धम्

अतिष्ठिपत् –

'स्था' धातु से 'हेतुमतिच' से णिच्	–	स्था+णिच्
अनुबन्ध लोप	–	स्था+इ
'अर्तिह्रीव्ली..' से 'पुक्' का आगम	–	स्था+पुक्+इ
पुक् का अनुबन्ध लोप – प् शेष	–	स्था+प्+इ
	–	स्थापि
'सनाद्यन्ता..' से स्थापि की धातुसंज्ञा	–	स्थापि+लट्
'तिप्तस्झि ...' से तिप् प्रत्यय	–	स्थापि+तिप्
णिच् के इ को अलग रखते हुए	–	स्थाप्+इ+तिप्
'लुङ्लङ्लृक्ष्वड्उदात्तः' से अट् का आगम	–	अट्+स्थाप्+इ+तिप्
अनुबन्ध लोप	–	अ+स्थाप्+इ+ति
च्लि प्रत्यय– च्लि को चङ्	–	अ+स्थाप्+इ+चङ्+ति
'इतश्च से तिप् का इ' लोप	–	अ+स्थाप्+इ+चङ्+त्

अनुबन्ध लोप	–	अ+स्थाप्+इ+अ+त्
'चडि.' से द्वित्व	–	अ+स्थाप्+स्थाप्+इ+अ+त्
'पूर्वोऽभ्यासः' पूर्व स्थाप् को अभ्यास संज्ञा	–	
'हलादिशेषः' 'शर्पूवाखयः' से अभ्यास का 'था' शेष	–	अ+था+स्थाप्+इ+अ+त्
'ह्रस्वः' से था का थ –		
'अभ्यासे चर्च' से थ का 'त' आदेश	–	अ+त+स्थाप्+इ+अ+त्
'तिष्ठतेरित्' से अभ्यास को 'इ'	–	अ+ति+स्थाप्+इ+अ+त्
'णरनिटि' से णिच् के इ का लोप	–	अ+ति+स्थाप्+इ+अ+त्
तथा 'णौचडि. से स्थाप् की उपधाह्रस्व होकर	–	अ+ति+स्थप्+अ+त्
'सन्यतः' स स्थप् को इत्व		
तथा 'ष्टुनाष्टुः से ष्टुत्व होकर	–	अ+ति+ष्ठिप्+अ+त् अतिष्ठिपत्

इति सिद्धम्

सूत्र व्याख्या –

मितां ह्रस्वः

घट् तथा 'ज्ञप्' आदि धातुओं की उपधा को ह्रस्व होता है, णिच् परे रहते।

शब्द सिद्धि –

घटयति – घट् धातु से 'हेतुमति च' से णिच्	–	घट्+णिच्
अनुबन्ध लोप होकर	–	घट्+इ
'अत उपधायाः' से उपधा दीर्घ	–	घाट्+इ घाटि
'मितां ह्रस्वः' से पुनः उपधाह्रस्वः	–	घट्+इ घटि
'सनाद्यन्ताः धातवः' से धातु संज्ञा,		
तिप्, शप्, अनुबन्ध लोप आदि करके	–	घटि+शप्+तिप्
'सार्वधातुकार्धधातुकयोः' से गुण	–	घटे+अ+ति
'एचोऽयवायावः' से अय् आदेश	–	घटय्+अ+ति
	=	घटयति

इति सिद्धम्

ज्ञपयति	–	घटयति के समान
अजिज्ञपत्	–	अबीभवत् के समान
अजीघटत्	–	अबीभवत् के समान

केवल ज्ञान वृद्धि के लिए– णिजन्त भ् धातु के छः लकारों में रूप अंत में दिये जा रहे हैं। छात्र पूर्व ज्ञान के आधार सिद्धि करके अभ्यास कर सकते हैं।

बोध प्रश्न

1. ण्यन्त अथवा णिजन्त से क्या तात्पर्य है ?
2. स्वतन्त्रः कर्ता सूत्र का अर्थ लिखो।
3. हेतुमतिच' सूत्र की व्याख्या कीजिए।
4. ओःपुयण्ज्यपरे' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
5. 'अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यां पुङ्णौ' सूत्र के आधार पर स्था धातु का णिजन्त रूप बनाओ।

6. 'मितांह्रस्व' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।।

7. धातु रूप सिद्धि करें –

1) भावयति
2) अबीभवत्
3) स्थापयति
4) अतिष्ठिपत्
5) घटयति
6) ज्ञपयति
7) अजीघटत्

17.5 सनन्त प्रक्रिया

किसी कार्य को करने की इच्छा करने का अर्थ प्रकट करने के लिए धातु से 'सन्' प्रत्यय लगाया जाता है। अतः धातु का जो अर्थ है वह सनन्त होने पर उसी अर्थ की इच्छार्थक धातु बन जाती है। सन् प्रत्यय जुडी धातु तथा मूल धातु का कर्ता एक ही होना चाहिए। अर्थात् इच्छा करने वाला तथा जिसके लिए इच्छा की जावे, वह एक ही होना चाहिये।

जैसे – राम पढ़ना चाहता है – रामः पिपठिषति।

यहाँ राम स्वयं पढना चाहता है अतः उसके लिए सन् प्रत्यय का रूप पिपठिषति बनता है। यदि राम चाहता है कि सोहन पढ तो वहाँ सन् प्रत्यय का प्रयोग नहीं होगा।

17.5.1 सनन्त प्रक्रिया के प्रमुख सूत्र –

1. **धातोः कमणः समानकतृकादिच्छायां वा –**

   जब इच्छा करने वाला तथा इच्छा का कम एक होता है अर्थात् जब इच्छा करने वाला स्वयं उस कार्य को करना चाहता है, तब धातु से सन् प्रत्यय किया जाता है। यथा– सः पिपठिषति वह पढना चाहता है।

2. **सन्यङो –**

   सन् प्रत्ययान्त तथा यङ् प्रत्ययान्त धातु को द्वित्व किया जाता है।

   यथा – पठ्+सन् – पठ् पठ् सन्

7.5.2 सनन्त धातु रूप सिद्धि :–

(1) पिपठिषति :–

पठ् धातु से 'धातोःकमणः..' सूत्र से सन् प्रत्यय	–	पठ्+सन्
'हलन्त्यम्' से सन् के न् का लोप	–	पठ्+स
'आर्धधातुकम् शेषः' से आर्धधातुक संज्ञा	–	
'आर्धधातुकस्येड् वलादेः' से सन् को इट्	–	पठ्+इट्+स
अनुबन्ध लोप	–	पठ्+इ+स
'सन्यङो' से द्वित्व	–	पठ्+पठ्+इ+स
'सन्यन्तः' से अभ्यास को 'इ' हुआ	–	पि+पठ्+इ+स
धातु संज्ञा, तिप्, शप्, अनुबन्ध लोप	–	पिपठिस+अ+ति
'आदेश प्रत्यययोः' से षत्व		
तथा 'अतो गुणे' से पर रूप होकर	–	पिपठिषति

इति सिद्धम्

सूत्र की व्याख्या :–

1. **सः स्यार्धधातुके** – आर्धधातुक सकारादि प्रत्यय परे रहते पूर्व 'स्' को 'त्' आदेश हो जाता है। यथा जिघस्+स+ति जिघत्सति
2. **अज्झनगमां सनि** – अजन्त धातु, हन् धातु तथा अजादेश गम् धातु की उपधा को दीर्घ होता है, झलादि सन् प्रत्यय परे रहते।
3. **इको झल्** – इगन्त से परे झलादि सन् कित् होता है।
4. **सनिग्रह गुहोश्च** – ग्रह् धातु, गुह् धातु और उगन्त धातु से परे सन् को इट् नहीं होता।

सनन्त धातुरूप सिद्धि –

1. **जिघत्सति** – अत्तम् इच्छति – खाने की इच्छा करता है

'अद्' धातु से 'धाधोःकमण....' से सन् प्रत्यय	–	अद्+सन्
'लुङसनोर्घस्लृ' से सनन्त अद्		
धातु को घसलृ ;घस्द्ध आदेश	–	घस्+सन्
'सन्यङोः' से द्वित्व हुआ	–	घस्+घस्+सन्
'पूर्वोऽभ्यासः' से पूर्व की अभ्यास संज्ञा		
'हलादि शेषः' से 'घ' शेष	–	घ+घस्+सन्
'सन्यतः' से अभ्यास को इ आदेश	–	घि+घस्+स
'कुहोश्चुः से 'घ्' को झ् तथा		
'अभ्यासे चर्च' से झ् को ज्	–	जिघस्+स
'सःस्यार्धधातुके' से धस् के स् को त् आदेश	–	जिघत्स
'सनाद्यन्ताः धातवः' से धातु संज्ञा		
तिप्, शप्, अनुबन्धलोप	–	जिघत्स+शप्+तिप्
जिघत्स+अ+ति		
'अतो गुणे' से पररूप होकर	–	जिघत्सति

इति सिद्धम्

2. **चिकीर्षति** – कर्तुम् इच्छति

'कृ' धातु से 'धातोः कमण..' से सन्	–	कृ+सन्
'अज्झनगमां सनि' से ऋ को दीर्घ	–	कॄ+स
'ऋत् इद्धातोः' से ऋ को 'इर्'	–	किर्+स
'सन्यङोः' से द्वित्व	–	किर्+किर्+स
अभ्यास कार्य में 'हलादिशेषः'		
'कुहोश्चुः से	–	चि+किर्+स
'हलि च' से दीर्घ होकर	–	चिकीर्स
'आदेशः प्रत्यययोः' से षत्व	–	चिकीर्ष
धातु संज्ञा, तिप्, शप्, अनुबन्ध लोप होकर	–	चिकीर्ष+शप्+तिप्
		चिकीर्ष+अ+ति
अतो गुणे से पररूप होकर	–	चिकीर्षति

इति सिद्धम्

3. **बुभूषति** –

भ् धातु से 'धातोः ..' से सन्	–	भ्+सन्
सन्यङोः से द्वित्व	–	भ्+भ्+स
पूर्वोऽभ्यासः से पूर्व की अभ्यास संज्ञा		
ह्रस्वः से अभ्यास को ह्रस्व	–	भ+भ्+स
'अभ्यासे चर्च' से भ को ब्	–	बु+भ्+स
'आदेश प्रत्यययोः' से षत्व	–	बुभ्ष
'सनाद्यन्ताः धातवः' से धातुसंज्ञा		
'तिप्तस्...'तिप् प्रत्यय	–	बुभ्ष+तिप्
'तिङ्शित् सार्वधातुकम्' से सार्वधातुक संज्ञा		
'कतरिशप्' से शप्	–	बुभ्ष+शप्+तिप्
अनुबन्ध लोप होकर	–	बुभ्ष+अ+ति
अतो गुणे से पररूप	–	बुभ्षति

इति सिद्धम्

17.6 पारिभाषिक शब्दावली

व्याकरण – की परिभाषाएँ ''व्याक्रियन्ते शब्दा अनेनेति व्याकरणम्'' अर्थात् जिससे शब्दों का प्रकृति–प्रत्यय आदि रूप से विभाग किया जाता है, वह व्याकरण है।
धातु' – शब्द का अर्थ है– जिससे शब्दों की व्युत्पत्ति हो, वह मूल आधार।

स्वतन्त्रः कर्ता – क्रिया की उत्पत्ति में जो प्रधान रूप से विवक्षित हो, उसे कर्ता कहते हैं।
तत्प्रयोजको हेतुश्च – कर्ता के प्रयोजक को हेतु कहते हैं और उसकी हेतु तथा प्रेरक संज्ञा होती है।

17.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

बोध प्रश्न

1. 'धातोः कमणः समानकर्तृकादिच्छायां वा' सूत्र की व्याख्या कीजिए
2. सन्यङोः को उदाहरण सहित समझाइये।
3. स'ः स्यार्धधातुके' का प्रयोजन सिद्ध करे।
4. 'अज्झनगमां सनि' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
5. 'इको झल्' सूत्र से क्या तात्पर्य है ?
6. 'पिपठिषति' धातु रूप की सूत्र निर्देश पूर्वक सिद्धि करो।
7. 'जिघत्सति' धातु रूप की सूत्र निर्देश पूर्वक सिद्धि करो
8. 'चिकीर्षति' धातुरूप की सूत्र निर्देश पूर्वक सिद्धि कीजिए।
9. बुभूषति – धातु रूप की सिद्धि कीजिए

17.8 सारांश

इस प्रकार इस इकाई में हमने तिङन्त बोध,परस्मैपदीप्रत्यय,आत्मनेपदीप्रत्यय,सामान्यधातुरूप, विचारविशेष धातुरूप विचार का ज्ञान प्राप्त किया । णिजन्त प्रक्रिया के अन्तर्गत णिजन्त प्रक्रिया के प्रमुख सूत्र एवं णिजन्त प्रक्रिया के उदाहरणों की रूपसिद्धि इत्यादि को जाना। इसी के साथ इस इकाई में हमने सनन्त प्रक्रिया,सनन्त, प्रक्रिया के प्रमुख सूत्र,सनन्त धातु रूप सिद्धि के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर पायें हैं ।

17.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लघुसिद्धांत कोमुदी,गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2014.
2. लघुसिद्धांत कौमुदी,श्री भीमसेन शास्त्री,चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 2007.
3. लघुसिद्धांत कौमुदी,श्री महेष सिंह कुशवाहा, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 2012.
4. लघुसिद्धांत कौमुदी,श्री धरानंद शास्त्री,आयुर्वेद हिन्दी पुस्तक भण्डार, जयपुर, १६६६.
5. लघुसिद्धांत कौमुदी,डॉ0 अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर, 1997.

इकाई—18

संस्कृत व्याकरण— यङन्त, यङ्लुगन्त एवं नाम धातु प्रकरण

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्देश्य

18.1 प्रस्तावना

18.1.1 लघुसिद्धांत कौमुदी : एक परिचय

18.1.2 तिङन्त बोध

18.1.3 सामान्य धातु विचार

18.1.4 विशेष धातु विचार

18.2 यङन्त प्रकरण

18.2.1 यङन्त प्रकरण के प्रमुख सूत्र

18.2.2 यङन्त रूपसिद्धि

18.3 यङ्लुक् प्रकरण

18.3.1 यङ्लुक् प्रत्यय के प्रमुख सूत्र

18.3.2 शब्द रूप सिद्धि

18.4 नाम धातु प्रकरण

18.4.1 नाम धातु प्रयोग के प्रमुख सूत्र

18.4.2 क्वच् प्रत्ययान्त नाम धातु रूपों की सिद्धि

18.5 पारिभाषिक शब्दावली

18.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

18.7 सारांश

18.8 संदर्भ ग्रंथ सूची

18.0 उद्देश्य

संस्कृत एम.ए. पूर्वार्द्ध के चतुर्थ प्रश्न पत्र की इकाई 18 में लघुसिद्धान्त कौमुदी के अनुसार णिजन्त एवं सनन्त प्रक्रिया को निर्धारित किया गया है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप—

- यङन्त प्रकरण के प्रमुख सूत्रों की व्याख्या तथा यङन्त शब्दों की रूपसिद्धि कर पायेंगें ।
- यङ्लुक् प्रत्यय के प्रमुख सूत्रों की व्याख्या तथा यङ्लुक् शब्दों की रूपसिद्धि कर पायेंगें ।
- नाम धातु प्रकरण के प्रमुख सूत्रों की व्याख्या तथा क्वच् प्रत्ययान्त शब्दों की रूपसिद्धि कर पायेंगें ।

18.1 प्रस्तावना

''व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते शब्दाः अनेनेति व्याकरणम्, जिसके द्वारा प्रकृति—प्रत्यय का विवेचन किया जाता है। यजुर्वेद में व्याकरण का अर्थ है कि प्रजापति ने शब्दरूपों में सत्य और अनृत का व्याकरण (विश्लेषण) किया। इस आधार पर सत्य में श्रद्धा और असत्य में अश्रद्धा की प्रतिष्ठा की। महाभाष्यकार पतञ्जलि ने व्याकरण की अनेक परिभाषाएँ दी हैं।

व्याकरण की परिभाषाएँ – ''व्याक्रियन्ते शब्दा अनेनेति व्याकरणम्'' अर्थात् जिससे शब्दों का प्रकृति–प्रत्यय आदि रूप से विभाग किया जाता है, वह व्याकरण है।

इसी प्रकार ''लक्ष्यलक्षणे व्याकरणम्' अर्थात् लक्ष्य और लक्षण दोनों मिलकर व्याकरण होता है। शब्द लक्ष्य है और सूत्र लक्षण है। शब्द का प्रकृति–प्रत्यय विश्लेषण करने वाला शास्त्र व्याकरण शास्त्र है। अतः शब्द के निर्धारण में सूत्रों का निश्चित करना ही व्याकरण है।

18.1.1 लघुसिद्धांत कौमुदी : एक परिचय –

पाणिनि मुनि व्याकरण शास्त्र के प्रवर्तक आचार्य हुए, जिन्होंने अष्टाध्यायी में व्याकरणात्मक ज्ञान के लिए अपना एक क्रम रखा, जो विद्वानों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं वैज्ञानिक क्रम था, परन्तु इस क्रम में सूत्रों का क्रम विषय–क्रम के अनुसार एक स्थान पर न होने के कारण व्याकरण ज्ञान के साधारण जिज्ञासु की कठिनाई को देखकर 'भट्टोजिदीक्षित' ने अष्टाध्यायी के सूत्रों को विषय क्रमानुसार व्यवस्थित करते हुए ''सिद्धांत कौमुदी'' की रचना की, जिसकी टीका (प्रौढ़मनोरमा) भो उन्होंने स्वयं लिखी।

'सिद्धांत कौमुदी' में अष्टाध्यायी के सभो सूत्रों का समावेश होने के कारण उसकी विशालता को देखते हुए भट्टोजिदीक्षित के शिष्य वरदराजाचार्य ने सरल रूप प्रस्तुत करने के लिए 'मध्यसिद्धान्तकौमुदी' रूप में संक्षेपण किया तथा बालकों को शीघ्र व्याकरण का बोध कराने के लिए बारह सौ अस्सी सूत्रों में ही सभो विषयों के मुख्य–मुख्य बिन्दु एकत्रित करके ''लघुसिद्धांत कौमुदी'' की रचना की। इस ग्रन्थ में विषय क्रम इस प्रकार है– संज्ञा प्रकरण– सन्धि प्रकरण' सुबन्त (अजन्त–हलन्त) प्रकरण– अव्यय प्रकरण– तिङन्त प्रकरण (दस लकारों में धातु रूप सिद्धि)– प्रक्रिया भाग– कृदन्त प्रकरण– कारक प्रकरण– समास प्रकरण– तद्धित प्रकरण– स्त्री प्रत्यय।

18.1.2 तिङन्त बोध

ये सभो लकार वर्तमान, भ्त, भविष्य आदि कालों के वाचक हैं अथवा विधेयादि के बोधक हैं।

प्रत्येक लकार में तीन पुरूष होते हैं, जिनके प्रत्येक के तीन–तीन वचन।

इस प्रकार प्रत्येक धातु के नौ रूप पाये जाते हैं। जिन धातुओं से ये विभक्तियाँ बनाई जाती हैं, वे भो दो प्रकार की होती हैं– परस्मैपद और आत्मनेपद।

सामान्यतः धातुओं से जिन प्रत्ययों को जोड़कर धातु रूप बनाये जाते हैं वे प्रत्यय 'तिङ्' प्रत्यय कहलाते हैं तथा उनसे युक्त धातु रूपों को 'तिड.न्त' कहा जाता है।

ये 'तिङ्' प्रत्यय परस्मैपद तथा आत्मेपद में मिलाकर 9+9 18 होते हैं, जिनका प्रारम्भ 'तिप्' के 'ति' से शुरू होकर समापन 'महिङ' के 'ङ्' पर होता है। इसीलिए इन्हें 'तिङ्' प्रत्यय (प्रत्याहार की परम्परा से) कहा जाता है

ये तिङ् प्रत्यय हैं –

परस्मैपदी प्रत्यय

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	तिप्	तस्	झि
मध्यम पुरुष	सिप्	थस्	थ
उत्तम पुरुष	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपदी प्रत्यय

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इड्	वहि	महिङ्

18.1.3 सामान्य धातु रूप विचार–

सामान्यतः धातु रूप बनाने मे धातु से तिप् आदि प्रत्यय लगाकर सामान्य क्रिया रूप बनाये जाते हैं। यथा–

भ्+तिप् भवति पठ्+तिप् पठति इत्यादि।

18.1.4 विशेष धातु रूप विचार –

प्रत्येक धातु का अपना एक निश्चित अर्थ होता है, जिसके साथ तिङ् प्रत्यय जोड़कर धातु रूप बनाया जाता है, परन्तु धातुरूप से जब कोई विशेष अभिप्राय लिया जाता है, तो उसके लिए

धातु के आगे विशेष प्रत्यय जोड़कर एक विशेष धातुरूप बनाया जाता है, तत्पश्चात् उससे 'तिङ्' प्रत्यय जोड़ते हुए धातुरूप बनाया जाता है और इस विधि को 'प्रक्रिया' के नाम से अभिहित किया जाता है। ये प्रक्रियाएँ अथवा प्रत्ययान्त धातुएँ चार प्रकार की होती हैं– णिजन्त/ण्यन्त,सनन्त, यङन्त और नामधातु।

18.2 यङन्त प्रकरण

किसी धातु से उसके पुनः पुनः होने अथवा अतिशय मात्रा में होना अर्थ अभोष्ट होता है तो उस धातु के आगे 'यङ्' प्रत्यय लगाया जाता है, तब वह धातु यङन्त धातु होकर उक्त अर्थ को प्रकट करती है। तदनन्तर उससे तिप्, शप् आदि लगाकर रूप सिद्ध किया जाता है।

18.2.1 यङन्त प्रकरण के प्रमुख सूत्र –

1. **धातोरेकाचो हलादेः क्रिया समभिहारे यङ् :–**

   धातु के पुनः–पुनः होने अथवा अतिशय रूप से होने के अर्थ में एक अच् (स्वर) वाली तथा हलादि (जिसके प्रारम्भ में व्यंजन हो) धातु से यङ् प्रत्यय किया जाता है। यथा बोभ्यते।

2. **गुणो यङ्लुको** :– यङ् प्रत्यय अथवा यङ्लुक् प्रत्यय परे रहते धातु के अभ्यास को गुण होता है। यथा– बोभ्यते – बोभ्याञ्चक्रे – अबोभ्यिष्ट

18.2.2 शब्दरूप सिद्धि –

1. **बोभूयते** :– पुनः पुनः भवति अतिशयेन भवति

भ् धातु से "धातोरेकाचो ...." से यङ् प्रत्यय	–	भ्+यङ्
हलन्त्यम् से ङ् लोप	–	भ्+य
सन्यङोः से द्वित्व	–	भ्+भ्+य
पूर्वोऽभ्यासः से पूर्व की अभ्यास संज्ञा, ह्रस्वः से		
भ् को भ	–	भ+भ्+य
अभ्यासे चर्च से भ को बु	–	बु+भ्+य
गुणो यङ्लुकोः से अभ्यास् को गुण	–	बोभ्य
सनाद्यन्ताः धातवः से बोभ्य की धातु संज्ञा		
"ङित् आत्मनेपदम्" से यङ् प्रत्यान्त		
बोभ्य धातु ङित् होने से आत्मनेपदी		
"त– आताम्– झ...." से त प्रत्यय	–	बोभ्य+त
"तिङ्शित् सार्वधातुकम्" से सार्वधातुक संज्ञा		
कतरि शप् से शप् प्रत्यय	–	बोभ्य+शप्+त
अनुबन्ध लोप से	–	बोभय+अ+त
अतो गुणे से पर रूप एकादेश से	–	बोभ्यत

''टित् आत्मनेपदानां टेरेः से त		
प्रत्यय की टि को एत्व	–	बोभ्यते

इति सिद्धम्

बोभूयाञ्चक्रे – यङन्त भ् धातु, लिट्लकार, प्र.पु., एकवचन

भ् धातु से ''धातो..'' से यङ्	–	भ्+यङ्
अनुबन्ध लोप	–	भ्+य
''सन्यङोः'' से द्वित्व	–	भ्+भ्+य
अभ्यास कार्य –पूर्वोऽभ्यासः से		
पूर्व भ् की अभ्यास संज्ञा		
''अभ्यासे चर्च'' से भ् को बू	–	बू+भ्+य
'ह्रस्वः'' से भ् को बु	–	बु+भ्+य
''गुणो यङ्लुकोः'' से बु को गुण	–	बोभ्य
''सनाद्यन्ताः धातवः से धातु संज्ञा		
धातु संज्ञक बोभ्य से लिट् लकार	–	बोभ्य+लिट्
''कास्यनेकाच् आम् वक्तव्यः'' से आम्		
प्रत्यय का आगम	–	बोभ्य+आम्+लिट्
''आर्धधातुकं शेषः'' से अर्धधातुकसंज्ञा		
''अतो लोपः'' से बोभ्य में से य के अ का लोप	–	बोभ्य्+आम्+लिट्
''आमः'' से आम् के पश्चात् लिट् लोप	–	बोभ्याम्
''कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि'' से अनेकाच्		
बोभ्याम् धातु को कृ का अनुप्रयोग	–	बोभ्याम्+कृ
''त – आताम् झ..'' से त प्रत्यय	–	बोभ्याम्+कृ+त
''लिटस्तझयोरेशिरेच्'' से त को एश् आदेश	–	बोभ्याम्+कृ+एश्
''लिटिधातोरनभ्यासस्य'' से कृ को द्वित्व	–	बोभ्याम्+कृ+कृ+एश्
''पूर्वोऽभ्यासः'' से पूर्व कृ की अभ्यास संज्ञा		
''उरत् और उरणरपरः से ऋ को अर आदेश	–	बोभ्याम्+कर्+कृ+एश्
हलादि शेषः से कर् का क शेष	–	बोभ्याम+क+कृ+एश्
कुहोश्चुः से क को च	–	बोभ्याम्+च+कृ+एश्
अनुबन्ध लोप होकर श् लोप	–	बोभ्याम्+च+कृ+ए
''इकोयणचि'' से ऋ को र्	–	बोभ्याम्+च+क्र+ए
मोऽनुस्वारः से म् को अनुस्वार	–	बोभ्यां चक्रे
''अनुस्वारस्य ययि पर सवर्णः से		
अनुस्वार को परस्वर्ण ञ्	–	बोभ्याञ्चक्रे

इति सिद्धम्

अबोभूयिष्टः – लुङ्लकार में

भ् धातु से ''धातोरेकाचो ....'' से यङ् प्रतयय	–	भ्+यङ्
हलन्त्यम् से ङ् लोप	–	भ्+य
सन्यङोः से द्वित्त्व	–	भ्+भ+य

पूर्वोऽभ्यासः से पूर्व की अभ्यास संज्ञा, ह्रस्वः से		
भ् को भ	–	भ+भ्+य
अभ्यासे चर्च से भ को बु	–	बु+भ्+य
गुणो यङ्लुकोः से अभ्यास् को गुण	–	बोभ्य
सनाद्यन्ताः धातवः से बोभ्य की धातु संज्ञा		
''ङित् आत्मनेपदम्'' से यङ् प्रत्यान्त		
बोभ्य धातु ङित् होने से आत्मनेपदी		
''त– आताम्– झ....'' से त प्रत्यय	–	बोभ्य+त
''लुङ्लङ्लृक्ष्वडुदात्तः'' से लुङ्लकार		
च्लि लुङि से च्लि प्रत्यय.. में अट् का आगम	–	अट्+बोभ्य+त
च्लि को च्लेः सिच् से सिच् प्रत्यय	–	अट्+बोभ्य+सिच्+त
अनुबन्ध लोप करके		
आर्धधातुकं शेषः से आर्धधातुक संज्ञा		
आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् का आगम	–	अ+बोभ्य+इट्+स्+त
हलन्त्यम् से इट् का ट् लोप	–	अ+बोभ्य+इ+स्+त
अतोलोपः से बोभ्य का अलोप	–	अ+बोभ्य्+इ+स्+त
आदेशः प्रत्यययो से मूर्धन्य	–	अबोभ्यिष्त
ष्टुना ष्टुः से त को ट	–	अबोभ्यिष्ट

इति सिद्धम्

सूत्र व्याख्या

1. **नित्यं कौटिल्ये गतौ** – गत्यर्थक धातु से कौटिल्य अर्थ में ही नित्य यङ् प्रत्यय होता है, क्रिया के पुनः पुनः होने अथवा अतिशयन प्रकट के लिए नहीं। यथा– वाव्रज्यते, वाव्रजाञ्चक्रे, वाव्रजिता
2. **दीर्घोऽकितः** – यङ् और यङ् लुक् प्रत्यय परे रहते कित् भिन्न अभ्यास को दीर्घ हो जाता है। यथा व व्रज्य का वाव्रज्य।
3. **यस्य हलः** – हल् तथा आर्धधातुक से परे यङ् के य का लोप हो जाता है।

शब्द सिद्धि –

1. **वाव्रज्यते** – व्रज्+लट्

व्रज् धातु से ''नित्यंकौटिल्य गतौ'' से यङ्	–	व्रज्+यङ्
हलन्त्यम् से ङ् लोप	–	व्रज्+य
सन्यङोः से द्वित्व	–	व्रज्+व्रज्+य
पूर्वोऽभ्यासः से पूर्व की अभ्यास संज्ञा	–	व्रज्+व्रज्+य
हलादिशेषः से व शेष	–	व+व्रज्+य
दीर्घोऽकितः से व को दीर्घ	–	वा+वज्+य वाव्रज्य
सनाद्यन्ताः धातवः से धातु संज्ञा	–	वाव्रज्य
ङित् आत्मनेपदम् से आत्मने पद प्रत्यय होंगे		
त–आताम्–झ..' से त प्रत्यय	–	वाव्रज्य+त
तिङ् शित् सार्वधातुकम् से सार्व.		

कतरि शप् से शप् आगम	–	वाव्रज्य+शप्+त
शप् का अनुबन्ध लोप	–	वाव्रज्य+अ+त
अतो गुणे से पररूप	–	वाव्रज्यत
टित् आत्मने पदानां टेरे से एत्व	–	वाव्रज्यते

इति सिद्धम्

2. वाव्रजाञ्चक्रे – व्रज्+यङ्+लिट्

नित्यं कौटिल्ये गतौ से व्रज् को यङ्प्रत्यय	–	व्रज्+यङ्
हलन्त्यम् से ङ् का लोप	–	व्रज्+य
सन्यङोः से द्वित्व	–	व्रज्+व्रज्+य
पूर्वोऽभ्यासः अभ्यास संज्ञा		
हलादि शेषः – व शेष	–	व+व्रज्+य
दीर्घोऽकितः से दीर्घ	–	वाव्रज्य
सनाद्यन्ताः धातवः से धातु संज्ञा		
लिट् लकार	–	वाव्रज्य+लिट्
आम् प्रत्यय (कास्यनेकाच् आम् वक्तव्यः से)	–	वाव्रज्य+आम्+लिट्
आर्ध धातुक संज्ञा	–	वाव्रज्य+आम्+लिट्
यस्य हलः से य का लोप	–	वाव्रज्+आम्+लिट्
		वाव्रजाम्+लिट्
आमः से लिट् का लोप	–	वाव्रजाम्
कृ का अनुप्रयोग	–	वाव्रजाम्+कृ
लिट् लकार में त प्रत्यय	–	वाव्रजाम्+कृ+त
त को एश् आदेश	–	वाव्रजाम्+कृ+एश्
एश् के श् का लोप	–	वाव्रजाम्+कृ+ए
लिटिधातोरनभ्यासस्य से द्वित्व	–	वाव्रजाम्+कृ+कृ+ए
पूर्व की अभ्यास संज्ञा	–	वाव्रजाम्+कृ+कृ+ए
उरत्, उरणरपरः से कृ को कर् आदेश	–	वाव्रजाम्+कर्+कृ+ए
हलादि शेषः से क शेष	–	वाव्रजाम्+क+कृ+ए
कुहोश्चुः से क को च	–	वाव्रजाम्+च+कृ+ए
इको यणचि से कृ को क्र	–	वाव्रजाम्+च+क्र्+ए
मोऽनुस्वारः से म को अनुस्वार	–	वाव्रजां+च+क्रे
अनुस्वारस्य ययि पर सवर्णः से		
अनुस्वार को ञ् आदेश	–	वाव्रजाञ्चक्रे

इति सिद्धम्

नोटः– विद्यार्थी सर्वत्र लिट् लकार में शब्द सिद्धि के लिए पूरे सूत्र बोभ्याञ्चक्रे की सिद्धि में से देख कर प्रयोग करें।

3. वाव्रजिता – व्रज्+लुट् लकार

व्रज् धातु से ''नित्यंकौटिल्ये गतौ'' से यङ्	–	व्रज्+यङ्
हलन्त्यम् से ङ् लोप	–	व्रज्+य

सन्यङोः से द्वित्व	–	व्रज्+व्रज्+य
पूर्वोऽभ्यासः से पूर्व की अभ्यास संज्ञा	–	व्रज्+व्रज्+य
हलादिशेषः से व शेष	–	व+व्रज्+य
दीर्घोऽकितः से व को दीर्घ	–	वा+वज्+य
		वाव्रज्य
सनाद्यन्ताः धातवः से धातु संज्ञा	–	वाव्रज्य
लुट्लकार में वाव्रज्य से त प्रत्यय	–	वाव्रज्य+त
स्य–तासी–लृलुटोः से लुट् के त को तास्	–	वाव्रज्य+तास्+त
आर्ध धातुकं शेषः से आर्ध धातुक संज्ञा		
आर्ध धातुकस्येड्वलादेः से इट् का आगम	–	वाव्रज्य+इट्+तास्+त
अट् के ट् का हलन्त्यम् से लोप	–	वाव्रज्य+इ+तास्+त
यस्य लोपः से यङ् का य लोप	–	वाव्रज्+इ+तास्+त
लुटः प्रथमस्य डारौरसः से त को डा आदेश	–	वाव्रजितास्+डा
''चुटू'' से डा के ड् का लोप	–	वाव्रजितास्+आ
डित् होने से तास् की भ संज्ञा	–	वाव्रजितास्++आ
टेः सूत्र से तास् के आस् का लोप	–	वाव्रजित्+आ
		वाव्रजिता

इति सिद्धम्

सूत्र की व्याख्या

रीगृदुपधस्यच :– जिस धातु की उपधा में ऋ है, उसमें यङ् और यङ्लुक् प्रत्यय परे रहते अभ्यास को रीक् का आगम होता है।

यथा – वरीवृत्यते, वरीवृताञ्चक्रे, वरीवर्तिता

शब्दसिद्धि –

वरीवृत्यते –

वृत् धातु से ''धातो....'' से यङ्	–	वृत्+यङ्
हलन्त्यम् से ङ लोप	–	वृत्+य
सन्यङोः से द्वित्व	–	वृत्+वृत्+य
पूर्वोऽभ्यासः से पूर्व की अभ्यास संज्ञा		
हलादि शेषः से अभ्यास के वृत् का व शेष	–	व+वृत्+य
''रीगृदुपधस्य च'' से रीक् का आगम	–	व+रीक्+वृत्+य
हलन्त्यम् से क् का लोप	–	व+री+वृत्+य
''सनाद्यन्ताः धातवः'' से धातु संज्ञा	–	वरीवत्य
ङित्–आत्मनेपदम् से यङ् प्रत्ययान्त आत्मनेपदी	–	वरीवृत्य
त–आताम्– झ.'' से त प्रत्यय	–	वरीवृत्य+त
तिङ्शित् सार्वधातुकम् से सार्व. संज्ञा	–	वरीवृत्य+त
कतरि शप् से शप् आगम	–	वरीवृत्य+शप्+त
अनुबन्ध लोप – शप् का अ शेष	–	वरीवृत्य+अ+त
अतो गुणे से पररूप	–	वरीवृत्य+त

टित् आत्मने पदानां टेरे से त को एत्व	–	वरीवृत्यते

इति सिद्धम्

वरीवृताञ्चक्रे – वृत् धातु लिट्लकार		
वृत् धातु से ''धातो....'' से यङ्	–	वृत्+यङ्
हलन्त्यम् से ङ् लोप	–	वृत्+य
सन्यङोः से द्वित्व	–	वृत्+वृत्+य
पूर्वोऽभ्यासः से पूर्व की अभ्यास संज्ञा		
हलादि शेषः से अभ्यास के वृत् का व शेष	–	व+वृत्+य
''रीगृदुपधस्य च'' से रीक् का आगम	–	व+रीक्+वृत्+य
हलन्त्यम् से क् का लोप	–	व+री+वृत्+य
''सनाद्यन्ताः धातवः'' से धातु संज्ञा	–	वरीवृत्य
वरीवृत्य से लिट् लकार	–	वरीवृत्य+लिट्
वरीवृत्य को आम् प्रत्यय	–	वरीवृत्य+आम्+लिट्
आमः से लिट् का लोप	–	वरीवृत्य+आम्
यस्यहलः से य का लोप	–	वरीवृत्+आम् वरीवृताम्
वरीवृताम् को लिट् में त प्रत्यय	–	वरीवृताम्+त
कृ का अनुप्रयोग	–	वरीवृताम्+कृ+त
त को एश् आदेश	–	वरीवृताम्+कृ+एश्
कृ को लिट् लकार में द्वित्व	–	वरीवृताम्+कृ+कृ+एश्
पूर्व की अभ्यास संज्ञा		
उरत्, उरणरपरः से कृ को कर्	–	वरीवृताम्+कर्+कृ+एश्
हलादि शेषः से कर् का क शेष	–	वरीवृताम्+क+कृ+एश्
कुहोश्चुः से क को च होने पर	–	वरीवृताम्+च+कृ+एश्
इको यणचि से कृ को क्र् होने पर	–	वरीवृताम्+च+क्र्+एश्
हलन्त्यम् से एश् का श् लोप	–	वरीवृताम्+च+क्र्+ए
मोऽनुस्वारः से म् को अनुस्वार	–	वरीवृतां+च+क्रे
अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः से		
अनुस्वार को ञ् आदेश	–	वरीवृताञ्चक्रे

इति सिद्धम्

वरीवर्तिता :– वृत्+लुट्लकार		
वृत् धातु से ''धातो....'' से यङ्	–	वृत्+यङ्
हलन्त्यम् से ङ् लोप	–	वृत्+य
सन्यङोः से द्वित्व	–	वृत्+वृत्+य
पूर्वोऽभ्यासः से पूर्व की अभ्यास संज्ञा		
हलादि शेषः से अभ्यास के वृत् का व शेष	–	व+वृत्+य
''रीगृदुपधस्य च'' से रीक् का आगम	–	व+रीक्+वृत्+य
हलन्त्यम् से क् का लोप	–	व+री+वृत्+य
''सनाद्यन्ताः धातवः'' से धातु संज्ञा	–	वरीवृत्य

वरीवृत्य से लुट् लकार में त प्रत्यय	–	वरीवृत्य+त
स्यतासी – लृलुटोः से तास् का आगम	–	वरीवृत्य+तास्+त
आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् आगम	–	वरीवृत्य+इट्+तास्+त
इट् का ट् लोप	–	वरीवृत्य+इ+तास्+त
यस्य हलः से य लोप	–	वरीवृत्+इ+तास्+त
वृत् के ऋ को गुण	–	वरीवर्त्+इ+तास्+त
लुटः प्रथमस्य डा–रौ–रसः से त को डा	–	वरीवर्ति+तास्+डा
चुटू से डा के ड् लोप का लोप	–	वरीवर्ति+तास्+आ
डित् होने से तास् की टि ;आस्द्ध का लोप	–	वरीवर्ति+त्+आ
		वरीवर्तिता

इति सिद्धम्

सूत्र की व्याख्याः–

1. **क्षुभ्नादिशु च** :– क्षुभ्नादि गण में पठित धातु के न को रकार परक होने पर भो णत्व नहीं होता। यथा– नरीनृत्यते, जरीगृह्यते।

शब्द सिद्धि

1. **नरीनृत्यते** :–

नृत् धातु से ''धातोरेकाचो..'' से यङ्	–	नृत्+यङ्
हलन्त्यम् से ङ् लोप	–	नृत्+य
सन्यङोः से द्वित्व हुआ	–	नृत्+नृत्+य
पूर्वोऽभ्यासः से अभ्यास संज्ञा		
''उरत्, उरण् रपरः से नृत् के ऋ को अर्	–	नर्त्+नृत्+य
हलादि शेषः से न शेष रहा	–	न+नृत्+य
''रीगृदुपधस्य च से अभ्यास को रीक्	–	न+रीक्+नृत्+य
हलन्त्यम् से क् लोप	–	न+री+नृत्+य
		नरीनृत्य
सनाद्यताः धातवः से धातु संज्ञा		
आत्मनेपद में त प्रत्यय	–	नरीनृत्य+त
सार्वधातुक संज्ञा, शप् आगम	–	नरीनृत्य+शप्+त
हलन्त्यम् से प् लोप, लशक्वतद्धिते से श् का लोप	–	नरीनृत्य+अ+त
अतो गुणे से पररूप	–	नरीनृत्य+त
टित् आत्मनेपदानां टेरे से एत्व	–	नरीनृत्यते

इति सिद्धम्

2. **जरीगृह्यते** – ग्रह् धातु से यङ्

''धातोरेकाचो..'' से ग्रह् धातु को यङ्	–	ग्रह्+यङ्
हलन्त्यम् से ङ् का लोप	–	ग्रह्+य
ङित् होने के कारण ग्रह् को गृह् आदेश	–	गृह्+य
सन्यङोः से द्वित्व	–	गृह्+गृह्+य
अभ्यास कार्य		

उरत्, उरण् रपरः से ऋ को अर्	–	गरह्+गृह्+य
हलादि शेषः से ग शेष	–	ग+गृह्+य
कुहोश्चुः से ग को ज आदेश	–	ज+गृह्+य
रीगृदुपधस्य च से अभ्यास को रीक् का आगम	–	ज+रीक्+गृह्+य
हलन्त्यम् से क् का लोप	–	जरी+गृह्+य
		जरीगृह्य
''सनाद्यन्ताः ....'' से धातु संज्ञा		
आत्मनेपद में त प्रत्यय	–	जरीगृह्य+त
सार्वधातुक संज्ञा, शप् का आगम	–	जरीगृह्य+शप्+त
अनुबन्ध लोप	–	जरीगृह्य+अ+त
अतो गुणे से पररूप	–	जरीगृह्य+त
टित् – आत्मनेपदानां टेरे से त को एत्व	–	जरीगृह्यते

इति सिद्धम्

18.3 यङ्लुक् प्रकरण

यङ्लुक् प्रकरण में आये यङ्लुक् प्रत्यय में दो शब्द हैं 'यङ्' और लुक्।

यहाँ यङ् प्रत्यय से तात्पर्य पूर्व में स्पष्ट किये जा चुके (पुनः पुनः अतिशयेन वा) पुनः पुनः अथवा
अत्यधिक मात्रा में होने के अर्थ में होता है। प्रत्यय का –अच्' प्रत्यय परे रहते अथवा कभो–कभो अच् प्रत्यय के अभाव में भो लोप हो जाता है। यङ्लुक् में यङ् प्रत्यय का लोप होने पर भो अर्थ वही यङ् प्रत्यय के समान रहता है यथा बोभाति।

18.3.1 यङ्लुक प्रत्यय के प्रमुख सूत्र

1. **यङोऽचि च** – कहीं अच् प्रत्यय परे रहते और कहीं अच् प्रत्यय के बिना भो यङ् प्रत्यय का लोप हो जाता है। लोप होने पर भो यङ्लुक् प्रत्ययान्त धातु का अर्थ ''पुनः पुनः होना तथा अत्यधिक मात्रा में होना'' होता है। यथा बोभाति।
2. **यङो वा** – यङलुगन्त धातु से परे इहादि पित् सार्वधातुक को ईट् का आगम होता है, विकल्प से। अर्थात् आगम होने पर बोभवीति रूप बनता है तथा आगम के अभाव में बोभाति रूप बनता है।

18.3.2 शब्दरूपसिद्धि

1. **बोभोति**– पुनः पुनः भवति

भ् धातु से ''धातोरेकाचो......''

सूत्र से यङ् प्रत्यय	–	भ्+यङ्
यङोऽचि च से यङ् का लोप	–	भ्
सन्यङो से द्वित्व हुआ	–	भ् भ्
गुणो यङ् लुकोः से अभ्यास को गुण	–	भो भ्
अभ्यासे चर्च सूत्र से भो को बो आदेश	–	बो भ्
सनाद्यन्ताः धातवः से धातु संज्ञा		
तिप्–तस्–झि..... से तिप्	–	बोभ्+तिप्
अनुबन्ध लोप	–	बोभ्+ति
तिङ शित् सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा		

कतरि शप् से शप्	–	बोभ्+शप्+ति
हलन्त्यम् से प् लोप तथा		
लशक्वतद्धिते से श् का लोप	–	बोभ्+अ+ति
आदिप्रभतिभ्यः शपः से शप् लोप	–	बोभो + ति
		बोभोति

इति सिद्धम्

विकल्प से ईट् होने पर बोभवीति –

2. **बोभवीति** – पुनः पुनः अतिशयेन वा भवति

भ् धातु से ''धातोरेकाचो......''

सूत्र से यङ् प्रत्यय	–	भ्+यङ्
यङोऽचि च से यङ् का लोप	–	भ्
सन्यङो से द्वित्व हुआ	–	भ् भ्
गुणो यङ् लुकोः से अभ्यास को गुण	–	भो भ्
अभ्यासे चर्च सूत्र से भो को बो आदेश	–	बो भ्
सनाद्यन्ताः धातवः से धातु संज्ञा		
तिप्–तस्–झि..... से तिप्	–	बोभ्+तिप्
अनुबन्ध लोप	–	बोभ्+ति
तिङ शित् सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा		
कतरि शप् से शप्	–	बोभ्+शप्+ति
हलन्त्यम् से प् लोप तथा		
लशक्वतद्धिते से श् का लोप	–	बोभ्+अ+ति
आदिप्रभतिभ्यः शपः से शप् लोप	–	बोभो + ति
''यङो वा' से ईट् का आगम	–	बोभो+ईट्+ति
अनुबन्ध लोप	–	बोभो+ई+ति
एचोऽयवायावः से अव् आदेश	–	बोभव्+ई+ति
		बोभवीति

इति सिद्धम्

3. **बोभूतः** – यङ्लुगन्त भ् धातु प्र0 प0, द्वि0 व0

भ् धातु से ''धातोरेकाचो......''

सूत्र से यङ् प्रत्यय	–	भ्+यङ्
यङोऽचि च से यङ् क लोप	–	भ्
सन्यङो से द्वित्व हुआ	–	भ् भ्
गुणो यङ् लुकोः से अभ्यास को गुण	–	भो भ्
अभ्यासे चर्च सूत्र से भो को बो आदेश	–	बो भ्
सनाद्यन्ताः धातवः से धातु संज्ञा		
तिप्–तस्–झि..... से तस्	–	बोभ्+तस्
हलन्त्यम् से स् का लोप प्राप्त		
परन्तु तस् के ङित्वत् होने से स् लोप निषेध	–	बोभ्+तस्

तिङ् शित् सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा		
कतरि शप् से शप्	–	बोभ्+शप्+तस्
अनुबन्ध लोप	–	बोभ्+अ+तस्
आदिप्रभतिभ्यः शपः से शप् लोप	–	बोभ्+तस
स् को रुत्व, रुत्व को विसर्ग	–	बोभ्तः

इति सिद्धम्

4. **बोभुवति**– यङन्त भ् धातु, प्र0 पु0 बहुवचन

भ् धातु से ''धातोरेकाचो......''		
सूत्र से यङ् प्रत्यय	–	भ्+यङ्
यङोऽचि च से यङ् क लोप	–	भ्
सन्यङो से द्वित्व हुआ	–	भ् भ्
गुणो यङ् लुकोः से अभ्यास को गुण	–	भो भ्
अभ्यासे चर्च सूत्र से भो को बो आदेश	–	बो भ्
सनाद्यन्ताः धातवः से धातु संज्ञा		
तिप्–तस्–झि..... से झि प्रत्यय	–	बोभ्+झि
सार्वधातुक संज्ञा, शप् प्रत्यय	–	बोभ्+शप्+झि
आदिप्रभतिभ्यः शपः से शप् लोप	–	बोभ्+झि
अदभ्यस्तात् से झ को अत् आदेश	–	बोभ्+अत्+इ
अचिश्नुधातुभ्वां य्वोरियङुवङो से ऊ को उवङ्	–	बोभ् ;उवङ्द्ध+अति
		बोभ+उवङ्+अति
		बोभ+उव्+अति
		बोभ्वति

इति सिद्धम्

शेष सिद्धियाँ विद्यार्थी अभ्यास के लिए अन्य प्रक्रियाओं के आधार पर करें।

18.4 नाम धातु प्रकरण

नाम धातु क्रिया– एक परिचय

जब किसी संज्ञा आदि के पश्चात् कोई प्रत्यय जोड़कर उसे धातु बना लिया जाता है, तब उसे नाम धातु कहा जाता है। संज्ञा अर्थात् नाम। नाम को धातु बनाना नाम धातु होता है।

नाम धातु का प्रयोग प्रायः लट् लकार में होता है। यद्यपि उसके रूप सभो लकारों में चल सकते हैं।

नाम धातु के भिन्न–भिन्न विशेष अर्थ होते हैं। नाम धातु बनाने के लिए क्यच्, काम्यच् तथा क्विप् आदि प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

18.4.1 नाम धातु प्रयोग के प्रमुख सूत्र –

1. **सुप आत्मनः क्यच्**– जिस वस्तु की अपने लिए इच्छा की जावे, उस वस्तुवाची शब्द से क्यच् प्रत्यय जोड़ा जाता है।

यथा– आत्मनः पुत्रमिच्छति पुत्रीयति।

2. **सुपोधातुप्रातिपदिकयोः**– धातु एवं प्रातिपादिक से सुप् का लोप हो जाता है।

3. **क्यचि च**– क्यच् प्रत्यय परे रहते अ वर्ण को ईत् आदेश हो जाता है।

18.4.2 क्यच् प्रत्ययान्त नाम धातु रूपों की सिद्धि –

1. पुत्रीयति – आत्मनः पुत्रमिच्छति

पुत्रम् शब्द से सुप आत्मनः क्यच् सूत्र से क्यच् प्रत्यय	पुत्रम्+क्यच्
हलन्त्यम् से च् का, लशक्वतद्धिते से क् का लोप	पुत्रम्+य
सनाद्यन्ताः धातव से धातु संज्ञा	पुत्रम्+य
सुपोधातुप्रातिपदिकयोः से पुत्रम् से अम् (सुप् प्रत्यय) का लोप	पुत्र+य
'क्यचि च' से पुत्र के अ को ई	पुत्रीय
पुनः धातु संज्ञा, तिप् प्रत्यय करके	पुत्रीय+तिप्
हलन्त्यम् से प् लोप	पुत्रीय+ति
''सार्वधातुक संज्ञा, शप् प्रत्यय	पुत्रीय+शप्+ ति
हलन्त्यम् से प् लोप तथा लशक्वतद्धिते से श् लोप	पुत्रीय+अ+ति
अतो गुणे से पररूप	पुत्रीयति।

इति सिद्धम्

2. राजीयति– आत्मनः राजानमिच्छति

राजानम् से ''सुप आत्मनः क्यच्'' से क्यच्	राजानम्+क्यच्
	राजन्+अम्+क्यच्
अनुबन्ध लोप	राजन्+अम्+य
सनाद्यन्ताः थातव से धातु संज्ञा	
सुपोधातु प्रातिपादिकयोः से सुप् (अम्) लोप	राजन्+य
नलोपो प्रातिपदिकान्तस्य से राजन् का न् लोप	राज+य
क्यचि च से अ को ई	राजीय
धातु संज्ञा, तिप् प्रत्यय	राजीय+तिप्
सार्वधातुक संज्ञा– शप् प्रत्यय	राजीय+शप्+तिप्
शप्, तिप् का अनुबन्ध लोप	राजीय+अ+ति
अतोगुणे से पररूप आदेश	राजीयति

इतिसिद्धम्

3. गीर्यति – गिरम् आत्मनः इच्छति

गिरम् से सुप. ..... से क्यच् प्रत्यय	गिरम्+क्यच् अनुबन्ध लोप
	गिरम्+य
सनाद्यन्ताः...... से धातु संज्ञा	
सुपोधातु...... से सुप् (अम्) लोप	गिर्+य
हलि च से दीर्घ	गीर्+य
	= गीर्य
धातु संज्ञा, तिप् प्रत्यय	गीर्य+तिप्
सार्वधातुक संज्ञा, शप् प्रत्यय	गीर्य+शप्+तिप्
अनुबन्ध लोप	गीर्य+अ+ति
अतो गुणे से पर रूप	गीर्यति

इति सिद्धम्

4. पूर्यति – आत्मनः पुरम् इच्छति

पुरम् से सुप.... से क्यच्	पुर्+अम्+क्यच्
अनुबन्ध लोप	पुर्+अम्+य
सनाद्यन्ताः...... से धातु संज्ञा	
सुपोधातु...... से सुप् (अम्) लोप	पुर्+य
हलि च से दीर्घ	पूर्+य
	= पूर्य
धातु संज्ञा, तिप् प्रत्यय	पूर्य+तिप्
सार्वधातुक संज्ञा, शप् प्रत्यय	पूर्य+शप्+तिप्

अनुबन्ध लोप — पूर्य+अ+ति
अतो गुणे से पर रूप पूर्यति

इति सिद्धम्

अन्य सूत्रों की व्याख्या –

1. **क्यस्य विभाषा** – हल् से परे क्यच् और क्यङ् प्रत्यय का लोप हो जाता है, यदि आर्घ धातुक प्रत्यय परे हो तो।
   यथा समिधिता तथा समिध्यिता
   रूपसिद्धि –
   समिध्यिता – समिधमिच्छति

समिधम् से सुप....... से क्यच्	समिध्+अम्+क्यच्
अनुबंध लोप	समिध्+अम्+य
सनाद्यन्ताः...... से धातु संज्ञा	
सुपो..... से सुप् (अम्) लोप	समिध्+य
	= समिध्य
लुट् लकार में तिप्	समिध्य+तिप्
स्यतासीलृलुटोः से तास् प्रत्यय	समिध्य+तास्+तिप्
आर्धधातुकं शेषः से आर्धधातुक संज्ञा	
आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट्–	समिध्य+इट्+तास्+तिप्
अनुबन्ध लोप	समिध्य+इ+तास्+तिप्
लुटः प्रथमस्य डा–रौ–रसः से तिप् को डा	समिध्य+इ+तास्+डा
चुटू से ड् लोप	समिध्य+इ+तास्+आ
डित् होने से तास् की टि (आस्) का लोप	समिध्य+इ+त्+आ
अतो लोपः से समिध्य के अ का लोप	समिध्यिता

इति सिद्धम्

विकल्प से	समिधिता
क्यस्य विभाषा से समिध्य का यलोप होकर	समिध्+इ+ता
	= समिधिता रूप बनेगा।

अन्य सूत्र की व्याख्या –

काम्यच्च – क्यच् प्रत्यय की परिस्थिति में ही अर्थात् इच्छा का कम और इच्छा का कर्ता एक होने पर क्यच् के समान काम्यच् प्रत्यय भो होता है।
यथा पुत्रकाम्यति।

शब्द धातुरूप सिद्धि –

पुत्रकाम्यति – आत्मनः पुत्रम् इच्छति

पुत्रम् शब्द से काम्यच् च सूत्र से काम्यच् प्रत्यय	पुत्रम्+काम्यच्
सनाद्य...... से धातु संज्ञा	पुत्र+अम्+काम्यच्
सुपोधातुप्रातिपदिकयोः से सुप् ;अम्द्ध लोप	पुत्र+काम्यच्
अनुबंध लोप	पुत्र+काम्य
	= पुत्रकाम्य
धातु संज्ञा, तिप् प्रत्यय	पुत्रकाम्य+तिप्
सार्वधातुक संज्ञा, शप् प्रत्यय	पुत्रकाम्य+शप्+तिप्
अनुबन्ध लोप	पुत्रकाम्य+अ+ति
अतो गुणे से पररूप	पुत्रकाम्यति

इति सिद्धम्

पुत्रकाम्यिता – आत्मनः पुत्रम् इच्छति

पुत्रम् शब्द से काम्यच् च सूत्र से काम्यच् प्रत्यय	पुत्रम्+काम्यच्
सनाद्य...... से धातु संज्ञा	पुत्र+अम्+काम्यच्
सुपोधातुप्रातिपदिकयोः से सुप् ;अम्द्ध लोप	पुत्र+काम्यच्

अनुबंध लोप	पुत्र+काम्य = पुत्रकाम्य
धातु संज्ञा, तिप् प्रत्यय	पुत्रकाम्य+तिप्
स्यतासी लृलुटोः से लुट् लकार में तास् का आगम	पुत्रकाम्य+तास्+तिप्
आर्धधातकं शेषः से आर्धधातुकसंज्ञा	
आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् का आगम	पुत्रकाम्य+इट्+तास्+ति
अनुबंध लोप	पुत्रकाम्य+इ+तास्+ति
लुटः प्रथमस्य डा–रौ–रसः से तिप् को डा आदेश	पुत्रकाम्य+इ+तास्+डा
चुटू से ड् का लोप	पुत्रकाम्य+इ+तास्+आ
टेः से तास् की टि लोप	पुत्रकाम्य+इ+त्+आ
अतोलोपः से काम्य के य के अ का लोप	पुत्रकाम्य् इ ता = पुत्रकाम्यिता

इति सिद्धम्

अन्य सूत्र की व्याख्या –

उपमानादाचारे – उपमान वाची कम के उपपद रहते व्यवहार–आचार अर्थ में क्यच् प्रत्यय होता है अर्थात् ''के समान आचरण करता है'' यह अर्थ निकलता हो तो भो काम्यच् प्रत्यय किया जाता है। यथा ''पुत्रीयति छात्रम्'' अर्थात् छात्र के प्रति पुत्र के समान आचरण करता है। छात्र को पुत्र के समान मानता है।

शब्दरूप सिद्धि

पुत्रीयति– पुत्रम् इव आचरति छात्रम्

पुत्रम् शब्द से सुप आत्मनः क्यच् सूत्र से क्यच् प्रत्यय	पुत्रम्+क्यच्
हलन्त्यम् से च् का, लशक्वतद्धिते से क् का लोप	पुत्रम्+य
सनाद्यन्ताः धातवः से धातु संज्ञा	पुत्रम्+य
सुपोधातु प्रातिपदिकयोः से पुत्रम् से अम् (सुप् प्रत्यय) का लोप	पुत्र+य
'क्यचि च' से पुत्र के अ को ई	पुत्रीय
तिप् प्रत्यय करके	पुत्रीय+तिप्
हलन्त्यम् से प् लोप	पुत्रीय+ति
''सार्वधातुक संज्ञा, शप् प्रत्यय	पुत्रीय+शप्+ ति
हलन्त्यम् से प् लोप तथा लशक्वतद्धिते से श् लोप	पुत्रीय+अ+ति
अतो गुणे से पररूप	पुत्रीयति।

इति सिद्धम्

विष्णूयति– विष्णुम् इव आचरति द्विजम्

उपमानादाचारे सूत्र से विष्णुम् से क्यच	विष्णुम्+क्यच्
अनुबन्ध लोप	विष्णु+अम्+य
सनाद्यन्ताः ...... से धातु संज्ञा	
सुपोधातु...... से सुप् (अम्) लोप	विष्णु+य
उ को दीर्घ (अकृत्..से)	विष्णूय
धातु संज्ञा, तिप् प्रत्यय	विष्णूय+तिप्
सार्वधातुक संज्ञा, शप् प्रत्यय	विष्णूय+शप्+तिप्
अनुबन्ध लोप	विष्णूयति

इति सिद्धम्

क्विप् प्रत्यय विधायक वार्तिक –

सर्वप्रातिपदिकेभ्यः क्विब्वा वक्तव्यः– आचार (व्यवहार अर्थ में सभो प्रातिपदिकों से क्विप् प्रत्यय होता है।) क्विप् का सर्वापहारी लोप होता है अर्थात् क्विप् प्रत्यय में– क्विप् के प् का हलन्त्यम से लोप, क् का लशक्वतद्धिते से लोप, व का वेरपृक्तस्य से तथा इ का उपदेशेऽजनुनासिकित् से लोप होता है। अतः एक बार क्विप् प्रत्यय लगाया जाता है और फिर उसका लोप कर दिया जाता है।

शब्दसिद्धि –

कृष्णति – कष्णः इव आचरित

कृष्णम् से ''सर्वप्राति0....'' वार्तिक से क्विप्–	कृष्ण+अम्+क्विप्
क्विप् का सर्वापहारी लोप करके	कृष्ण+अम्
सनाद्यन्ता..... से धातु संज्ञा, तिप् प्रत्यय–	कृष्ण+अम्+तिप्
सुपोधातु0 से सुप् (अम्) लोप	कृष्ण+ति
धातु संज्ञा, शप् प्रत्यय–	कृष्ण+शप्+ति
अनुबन्ध लोप	कृष्ण+अ+ति
अतो गुणे से पररूप	कृष्णति

इतिसिद्धम्

स्वति – स्व इव आचरति

सर्व प्राति0..... वार्तिक से क्विप् प्रत्यय–	स्व+क्विप्
क्विप् का सवापहारी लोप	स्व
धातु संज्ञा, तिप् प्रत्यय	स्व+तिप्
कतरि शप् से शप् प्रत्यय	स्व+शप्+ति
अतोगुणे से पररूप	स्वति

इति सिद्धम्

सस्वौ – स्व इव आचरति

सर्वप्राति0..... से क्विप्	स्व+क्विप्
सर्वापहारी लोप	स्व
सनाद्य0...... धातु संज्ञा	
लिट् लकार– तिप् प्रत्यय	स्व+तिप्
परस्मैपदानां णल्–अतुस्0.. से तिप् को णल् आदेश	स्व+णल्
ल् का हलन्त्यम् से, ण् का चुटू से लोप	स्व+अ
लिटिधातोरनभ्यासस्य से स्व को द्वित्व	स्व+स्व+अ
हलादि शेषः से स शेष	स+स्व+अ
आत औ णलः से णल् के अ को औ	स+स्व+औ
वृद्धिरेचि से वृद्धि एकादेश	सस्वौ

इति सिद्धम्

अन्य सूत्र की व्याख्या –

अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति– अनुनासिकान्त की उपधा को क्विप् या झलादि कित् प्रत्यय परे हो तो दीर्घ आदेश होता है।

शब्दरूप सिद्धि–

इदामति– इदम् इव आचरित	इदम्+क्विप्
सर्वापहारी लोप	इदम्
धातु संज्ञा, तिप्, शप्, उपधादीर्घ	इदाम्+शप्+तिप्
अनुबन्ध लोप	इदाम्+अ+ति
	इदामति

इति सिद्धम्

राजानति– राजा इव आचरित

राजन् + क्विप्–	राजन्+क्विप्
सर्वापहारी लोप–	राजन्
उपधादीर्घ	राजान्
धातुसंज्ञा, शप्, तिप्, अनुबन्ध लोप–	राजान्+अ+ति
	राजानति

इति सिद्धम्

पथीनति– पन्था इव आचरति– पथिन्+क्विप्

सर्वापहारी लोप, धातु संज्ञा, तिप्, शप्, उपधादीर्घ करक पथीनति

इति सिद्धम्

अन्य सूत्रों की व्याख्या–

कष्टाय क्रमणे– चतुर्थ्यन्त पद से उत्साह अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है। यथा–कष्टायते।

शब्द–वैरकलहाभ्रकण्वमेधेभ्यः करणेः– कमवाचक शब्द–वैर–कलह–अभ–कण्व–मेघ शब्द से करोति अर्थ में क्यङ् प्रत्यय होता है।

यथा – शब्दायते, वैरायते, कलहायते, अभायते, कण्वायते आदि।

कष्टायते– कष्टाय क्रमते

कष्टाय क्रमणे से कष्टाय (कष्ट ङे) से क्यङ् प्रत्यय	कष्ट+ङे+क्यङ्
अनुबन्ध लोप	कष्ट+ङे+य
धातु संज्ञा, सुप् ;ङेद्ध लोप	कष्ट+य
उपधा दीर्घ	कष्टाय
आत्मने पद में त प्रत्यय, शप् प्रत्यय	कष्टाय+शप्+त
अनुबन्ध लोप	कष्टाय+अ+ति
टित् आत्मनेपदानां टेरे से एत्व	कष्टाय+ अ+ते
अतो गुणे से पररूप	कष्टायते

इति सिद्धम्

शब्द रूपसिद्धि–

शब्दायते – शब्दं करोति

शब्दम् से शब्द0...... से क्यङ्	शब्द+अम्+क्यङ्
धातु संज्ञा, सुप् (अम्) लोप–	शब्द+क्यङ्
अनुबन्ध लोप	शब्द+य
अकृत्0....... से उपधा दीर्घ	शब्दाय
धातु संज्ञा, आत्मनेपद में त प्रत्यय, शप्	शब्दाय+शप्+त
अनुबन्ध लोप	शब्दाय+अ+त
टित् आत्मनेपदानां टेरेः से एत्व	शब्दाय+अ+ते
अतोलोपः से पररूप	शब्दायते

इति सिद्धम्

18.5 पारिभाषिक शब्दावली

व्याकरण – की परिभाषाएँ ''व्याक्रियन्ते शब्दा अनेनेति व्याकरणम्'' अर्थात् जिससे शब्दों का प्रकृति–प्रत्यय आदि रूप से विभाग किया जाता है, वह व्याकरण है।

लक्ष्य और लक्षण – इसी प्रकार ''लक्ष्यलक्षणे व्याकरणम्' अर्थात् लक्ष्य और लक्षण दोनों मिलकर व्याकरण होता है। शब्द लक्ष्य है और सूत्र लक्षण है। शब्द का प्रकृति–प्रत्यय विश्लेषण करने वाला शास्त्र व्याकरण शास्त्र है।

भट्टोजिदीक्षित के शिष्य वरदराजाचार्य ने सरल रूप प्रस्तुत करने के लिए **''लघुसिद्धांत कौमुदी''** – 'मध्यसिद्धान्तकौमुदी' रूप में संक्षेपण किया तथा बालकों को शीघ्र व्याकरण का बोध कराने के लिए बारह सौ अस्सी सूत्रों में ही सभी विषयों के मुख्य–मुख्य बिन्दु एकत्रित करके ''लघुसिद्धांत कौमुदी'' की रचना की।

तिङ.न्त' – सामान्यतः धातुओं से जिन प्रत्ययों को जोड़कर धातु रूप बनाये जाते हैं वे प्रत्यय 'तिङ्' प्रत्यय कहलाते हैं तथा उनसे युक्त धातु रूपों को 'तिङ.न्त' कहा जाता है।

ये 'तिङ्' प्रत्यय परस्मैपद तथा आत्मेपद में मिलाकर 9+9 18 होते हैं,

यङन्त – किसी धातु से उसके पुनः पुनः होने अथवा अतिशय मात्रा में होना अर्थ अभीष्ट होता है तो उस धातु के आगे 'यङ्' प्रत्यय लगाया जाता है, तब वह धातु यङन्त धातु होकर उक्त अर्थ को प्रकट करती है।

नाम धातु – जब किसी संज्ञा आदि के पश्चात् कोई प्रत्यय जोड़कर उसे धातु बना लिया जाता है, तब उसे नाम धातु कहा जाता है। संज्ञा अर्थात् नाम। नाम को धातु बनाना नाम धातु होता है।

18.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

बोध प्रश्न 1

1. नाम धातु से क्या तात्पर्य है?
2. क्यच् प्रत्यय किन–किन अर्थों में लगाया जाता है?
3. सुप् प्रत्ययों में कितने प्रत्यय बताये गये हैं?
4. नाम धातु रूपसिद्धि में सुप् का लोप कब किया जाता है और कौन से सूत्र से?
5. क्यच् और क्यङ् का लोप कब किया जाता है?
6. काम्यच् प्रत्यय किस अर्थ में लगाया जाता है?
7. उपमानादाचारे सूत्र से क्या तात्पर्य है?
8. कष्टाय क्रमणे सूत्र का अर्थ बताते हुए रूप सिद्ध कीजिए?
9. क्विप् प्रत्यय क्यों लगाया जाता है तथा उसके विधान का वार्तिक लिखकर समझाइये?
10. क्विप् प्रत्यय के लोप करने वाले रूपों को लिखकर समझाइये?
11. अधोलिखित शब्दरूपों की सूत्र निर्देशपूर्वक सिद्धि कीजिए–

1.	पुत्रीयति	2.	राजीयति
3.	पुत्रकाम्यति	4.	पुत्रकाम्यिता
5.	विष्णूयति	6.	स्वति
7.	सस्वौ	8.	कृष्णति
9.	इदामति	10.	राजानति
11.	पथीनति	12.	शब्दायते

13. कष्टायते

बोध प्रश्न 2

प्र0 1 यङन्त से क्या तात्पर्य है, स्पष्ट करो।

प्र0 2 ''धातोरेकाचो क्रिया समभिहारे यङ्'' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

प्र0 3 गुणो यङ्लुको सूत्र के प्रयोग का क्या प्रयोजन है ?

प्र0 4 दीर्घोऽकितः सूत्र से किसे दीर्घ किया जाता है ?

प्र0 5 यस्य हलः से किस का लोप होता है ?

प्र0 6 रीगृदुपधस्य च से रीक् का प्रयोग कब होता है?

प्र0 7 क्षुभ्नादिषु च सूत्र से किन–किन धातुओं की रूपसिद्धि की गई है?

प्र0 8 यङलुक् प्रत्यय कहाँ लगाया जाता है?

प्र0 9 यङो वा सूत्र से क्या तात्पर्य है? सोदाहरण बतावें।

प्र0 10 सूत्र निर्देशपूर्वक निम्न शब्द रूप सिद्ध कीजिए –

18.7 सारांश

इस प्रकार इस इकाई में हमने लघुसिद्धान्त कौमुदी के अनुसार णिजन्त एवं सनन्त प्रक्रिया का अध्ययन किया । इस इकाई में हमने यङन्त प्रकरण, यङ्लुक् प्रत्यय,नाम धातु प्रकरण के प्रमुख सूत्रों की व्याख्या की । यङ्लुक् तथा क्वच् प्रत्ययान्त शब्दों की रूपसिद्धि कर का ज्ञान प्राप्त किया ।

18.8 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लघुसिद्धांत कौमुदी,गोविन्द प्रसाद शर्मा, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2014.
2. लघुसिद्धांत कौमुदी,श्री भीमसेन शास्त्री,चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 2007.
3. लघुसिद्धांत कौमुदी,श्री महेष सिंह कुशवाहा, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 2012.
4. लघुसिद्धांत कौमुदी,श्री धरानंद शास्त्री,आयुर्वेद हिन्दी पुस्तक भण्डार, जयपुर, १६६६.
5. लघुसिद्धांत कौमुदी,डॉ0 अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर, 1997.